



# Sapna Thakur

06 Sep 1968

12:20 PM

Hamirpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 121401901

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 06/09/1968  
दिन \_\_\_\_\_: शुक्रवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 12:20:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 15:44:41 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Hamirpur  
राज्य \_\_\_\_\_: Himachal Pradesh  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 31:38:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 76:36:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:23:36 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 11:56:24 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:01:38 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 10:58:07 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:02:07 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:41:15 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 12:39:07 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: शरद  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 20:18:48 सिंह  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 09:38:18 वृश्चिक

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: वृश्चिक - मंगल  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: कुम्भ - शनि  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: शतभिषा - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: राहु  
योग \_\_\_\_\_: सुकर्मा  
करण \_\_\_\_\_: विष्टि  
गण \_\_\_\_\_: राक्षस  
योनि \_\_\_\_\_: अश्व  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: शूद्र  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मेष  
युँजा \_\_\_\_\_: अन्त्य  
हंसक \_\_\_\_\_: वायु  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: सा-सपना  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - ताम्र  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: कन्या

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1890	भाद्रपद	15
पंजाबी	संवत : 2025	भाद्रपद	22
बंगाली	सन् : 1375	भाद्रपद	21
तमिल	संवत : 2025	आवनी	22
केरल	कोल्लम : 1144	चिंगम	22
नेपाली	संवत : 2025	भाद्रपद	22
चैत्रादि	संवत : 2025	भाद्रपद	शुक्ल 15
कार्तिकादि	संवत : 2025	भाद्रपद	शुक्ल 15

### पंचांग

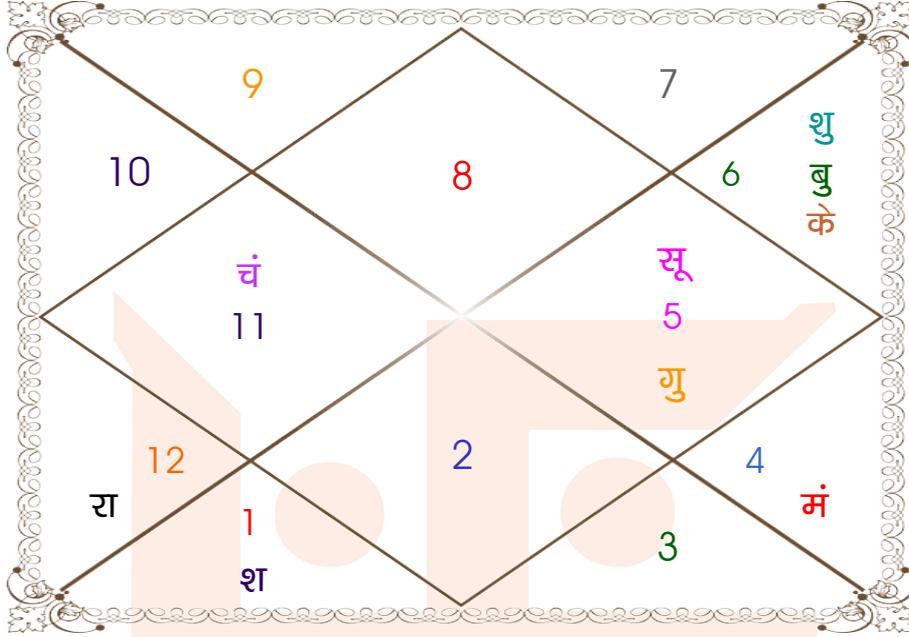
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 15  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 27:37:14  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 15  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : शतभिषा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 25:56:14 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : शतभिषा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : सुकर्मा  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 13:19:42 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : सुकर्मा  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : विष्टि  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 15:58:35 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : विष्टि  
भयात \_\_\_\_\_ : 25:34:15  
भभोग \_\_\_\_\_ : 59:34:49  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : राहु 10 वर्ष 2 मा 22 दि

### घात चक्र

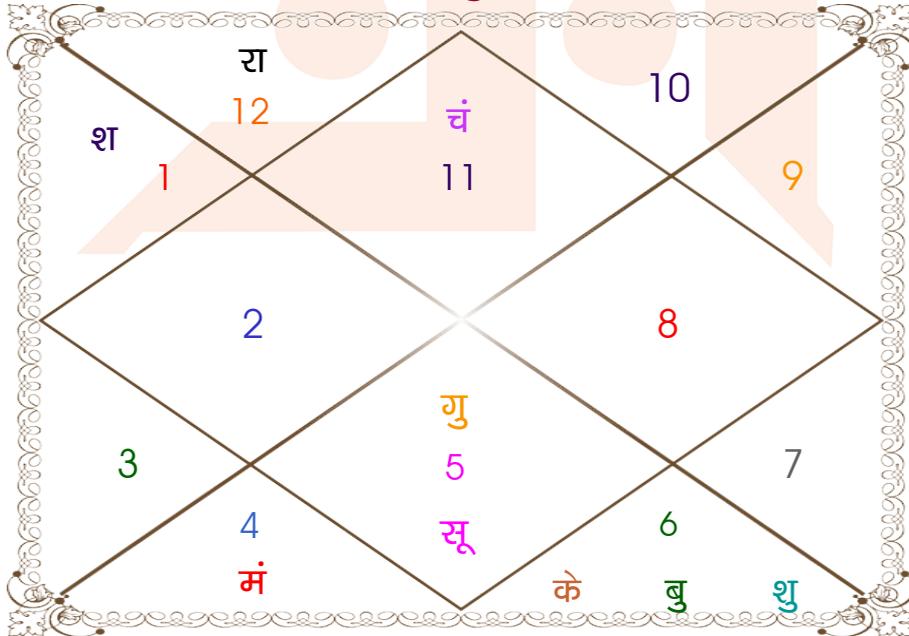
मास \_\_\_\_\_ : चैत्र  
तिथि \_\_\_\_\_ : 3-8-13  
दिन \_\_\_\_\_ : गुरुवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : आर्द्रा  
योग \_\_\_\_\_ : गण्ड  
करण \_\_\_\_\_ : किंस्तुघ्न  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 3  
वर्ग \_\_\_\_\_ : श्वान  
लग्न \_\_\_\_\_ : मिथुन  
सूर्य \_\_\_\_\_ : वृष  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मिथुन  
मंगल \_\_\_\_\_ : मिथुन  
बुध \_\_\_\_\_ : वृष  
गुरु \_\_\_\_\_ : कर्क  
शुक्र \_\_\_\_\_ : सिंह  
शनि \_\_\_\_\_ : मेष  
राहु \_\_\_\_\_ : कन्या

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

रा	श		
चं			मं
			गु सू
	ल		के बु शु

### लग्न कुंडली

	श	रा	
		चं	
मं			
सू गु			ल

विंशोत्तरी  
राहु 10वर्ष 2मा 22दि

राहु

06/09/1968

29/11/2080

राहु	29/11/1978
गुरु	29/11/1994
शनि	29/11/2013
बुध	29/11/2030
केतु	29/11/2037
शुक्र	29/11/2057
सूर्य	30/11/2063
चन्द्र	29/11/2073
मंगल	29/11/2080

योगिनी

धान्या 1वर्ष 8मा 13दि

सिद्धा

21/05/2021

21/05/2028

सिद्धा	01/10/2022
संकटा	21/04/2024
मंगला	01/07/2024
पिंगला	20/11/2024
धान्या	21/06/2025
भामरी	01/04/2026
भद्रिका	22/03/2027
उल्का	21/05/2028

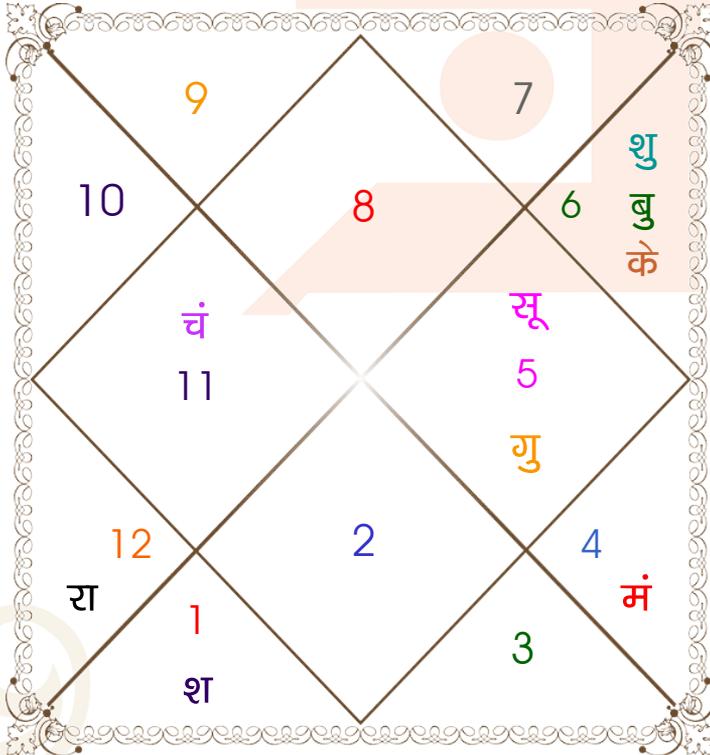
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	09:38:18	303:36:34	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	---
सूर्य			सिंह	20:18:48	00:58:12	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	स्वराशि
चंद्र			कुंभ	12:25:21	13:26:53	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	सम राशि
मंगल			कर्क	26:48:10	00:38:02	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	गुरु	नीच राशि
बुध			कन्या	13:13:37	01:24:04	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	राहु	उच्च राशि
गुरु		अ	सिंह	22:22:29	00:12:59	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	मित्र राशि
शुक्र			कन्या	11:30:35	01:13:46	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	मंगल	नीच राशि
शनि		व	मेष	01:21:57	00:02:57	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	नीच राशि
राहु		व	मीन	16:18:52	00:03:01	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	सम राशि
केतु		व	कन्या	16:18:52	00:03:01	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			कन्या	05:10:36	00:03:41	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	---
नेप			वृश्चि	00:37:00	00:01:01	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	मंगल	---
प्लूटो			सिंह	28:54:57	00:02:11	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	मंगल	---
दशम भाव			सिंह	19:47:30	--	पू०फाल्गुनी	--	11	सूर्य	शुक्र	राहु	--

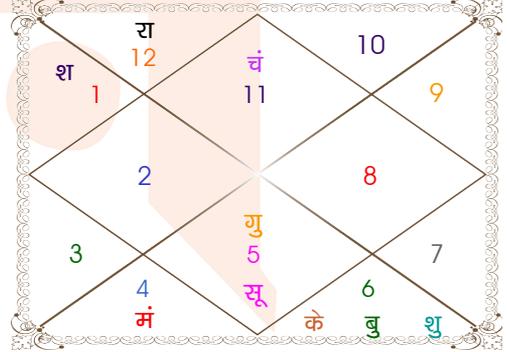
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:25:08

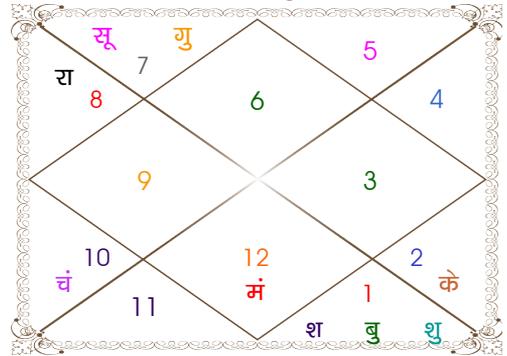
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 26:19:50	वृश्चिक 09:38:18
2	वृश्चिक 26:19:50	धनु 13:01:22
3	धनु 29:42:54	मकर 16:24:26
4	कुम्भ 03:05:58	कुम्भ 19:47:30
5	मीन 03:05:58	मीन 16:24:26
6	मीन 29:42:54	मेष 13:01:22
7	मेष 26:19:50	वृष 09:38:18
8	वृष 26:19:50	मिथुन 13:01:22
9	मिथुन 29:42:54	कर्क 16:24:26
10	सिंह 03:05:58	सिंह 19:47:30
11	कन्या 03:05:58	कन्या 16:24:26
12	कन्या 29:42:54	तुला 13:01:22

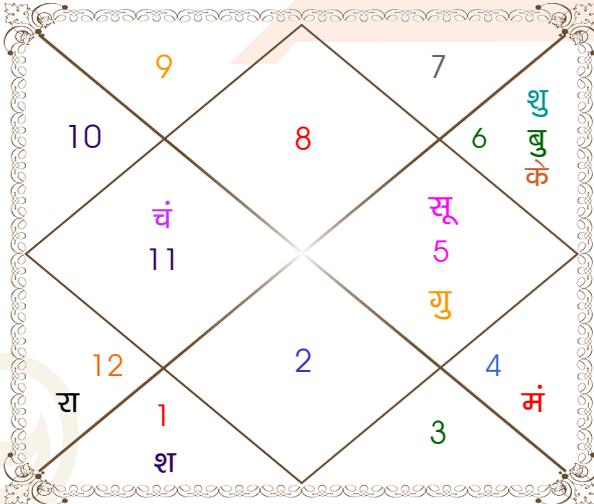
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	09:38:18
2	धनु	10:27:35
3	मकर	14:47:17
4	कुम्भ	19:47:30
5	मीन	21:04:57
6	मेष	17:11:30
7	वृष	09:38:18
8	मिथुन	10:27:35
9	कर्क	14:47:17
10	सिंह	19:47:30
11	कन्या	21:04:57
12	तुला	17:11:30

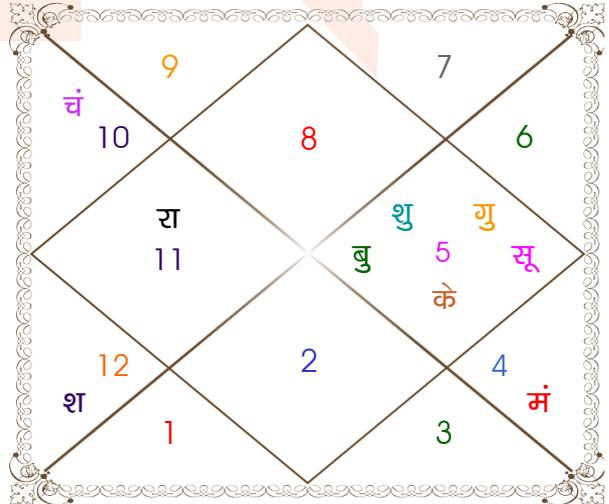
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 10 वर्ष 2 मास 22 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
06/09/1968	29/11/1978	29/11/1994	29/11/2013	29/11/2030
29/11/1978	29/11/1994	29/11/2013	29/11/2030	29/11/2037
00/00/0000	गुरु 17/01/1981	शनि 02/12/1997	बुध 27/04/2016	केतु 28/04/2031
06/09/1968	शनि 31/07/1983	बुध 11/08/2000	केतु 24/04/2017	शुक्र 27/06/2032
शनि 11/11/1968	बुध 05/11/1985	केतु 20/09/2001	शुक्र 23/02/2020	सूर्य 01/11/2032
बुध 31/05/1971	केतु 12/10/1986	शुक्र 20/11/2004	सूर्य 29/12/2020	चंद्र 03/06/2033
केतु 18/06/1972	शुक्र 12/06/1989	सूर्य 02/11/2005	चंद्र 31/05/2022	मंगल 30/10/2033
शुक्र 18/06/1975	सूर्य 31/03/1990	चंद्र 03/06/2007	मंगल 28/05/2023	राहु 17/11/2034
सूर्य 12/05/1976	चंद्र 31/07/1991	मंगल 12/07/2008	राहु 14/12/2025	गुरु 24/10/2035
चंद्र 11/11/1977	मंगल 06/07/1992	राहु 19/05/2011	गुरु 21/03/2028	शनि 02/12/2036
मंगल 29/11/1978	राहु 29/11/1994	गुरु 29/11/2013	शनि 29/11/2030	बुध 29/11/2037

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
29/11/2037	29/11/2057	30/11/2063	29/11/2073	29/11/2080
29/11/2057	30/11/2063	29/11/2073	29/11/2080	00/00/0000
शुक्र 31/03/2041	सूर्य 19/03/2058	चंद्र 29/09/2064	मंगल 27/04/2074	राहु 12/08/2083
सूर्य 31/03/2042	चंद्र 17/09/2058	मंगल 30/04/2065	राहु 16/05/2075	गुरु 05/01/2086
चंद्र 30/11/2043	मंगल 23/01/2059	राहु 30/10/2066	गुरु 21/04/2076	शनि 06/09/2088
मंगल 29/01/2045	राहु 18/12/2059	गुरु 29/02/2068	शनि 30/05/2077	00/00/0000
राहु 29/01/2048	गुरु 05/10/2060	शनि 29/09/2069	बुध 28/05/2078	00/00/0000
गुरु 29/09/2050	शनि 17/09/2061	बुध 01/03/2071	केतु 24/10/2078	00/00/0000
शनि 29/11/2053	बुध 25/07/2062	केतु 30/09/2071	शुक्र 24/12/2079	00/00/0000
बुध 29/09/2056	केतु 29/11/2062	शुक्र 30/05/2073	सूर्य 30/04/2080	00/00/0000
केतु 29/11/2057	शुक्र 30/11/2063	सूर्य 29/11/2073	चंद्र 29/11/2080	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 10 वर्ष 3 मा 9 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>बुध - गुरु</b> 14/12/2025 21/03/2028	<b>बुध - शनि</b> 21/03/2028 29/11/2030	<b>केतु - केतु</b> 29/11/2030 28/04/2031	<b>केतु - शुक्र</b> 28/04/2031 27/06/2032	<b>केतु - सूर्य</b> 27/06/2032 01/11/2032
गुरु 04/04/2026 शनि 13/08/2026 बुध 08/12/2026 केतु 25/01/2027 शुक्र 12/06/2027 सूर्य 24/07/2027 चंद्र 01/10/2027 मंगल 18/11/2027 राहु 21/03/2028	शनि 24/08/2028 बुध 10/01/2029 केतु 09/03/2029 शुक्र 19/08/2029 सूर्य 08/10/2029 चंद्र 28/12/2029 मंगल 24/02/2030 राहु 21/07/2030 गुरु 29/11/2030	केतु 08/12/2030 शुक्र 02/01/2031 सूर्य 09/01/2031 चंद्र 22/01/2031 मंगल 31/01/2031 राहु 22/02/2031 गुरु 14/03/2031 शनि 06/04/2031 बुध 28/04/2031	शुक्र 08/07/2031 सूर्य 29/07/2031 चंद्र 02/09/2031 मंगल 27/09/2031 राहु 30/11/2031 गुरु 26/01/2032 शनि 02/04/2032 बुध 02/06/2032 केतु 27/06/2032	सूर्य 03/07/2032 चंद्र 14/07/2032 मंगल 21/07/2032 राहु 09/08/2032 गुरु 26/08/2032 शनि 16/09/2032 बुध 04/10/2032 केतु 11/10/2032 शुक्र 01/11/2032
<b>केतु - चंद्र</b> 01/11/2032 03/06/2033	<b>केतु - मंगल</b> 03/06/2033 30/10/2033	<b>केतु - राहु</b> 30/10/2033 17/11/2034	<b>केतु - गुरु</b> 17/11/2034 24/10/2035	<b>केतु - शनि</b> 24/10/2035 02/12/2036
चंद्र 19/11/2032 मंगल 02/12/2032 राहु 03/01/2033 गुरु 31/01/2033 शनि 06/03/2033 बुध 05/04/2033 केतु 17/04/2033 शुक्र 23/05/2033 सूर्य 03/06/2033	मंगल 11/06/2033 राहु 04/07/2033 गुरु 23/07/2033 शनि 16/08/2033 बुध 06/09/2033 केतु 15/09/2033 शुक्र 10/10/2033 सूर्य 17/10/2033 चंद्र 30/10/2033	राहु 26/12/2033 गुरु 15/02/2034 शनि 17/04/2034 बुध 10/06/2034 केतु 03/07/2034 शुक्र 05/09/2034 सूर्य 24/09/2034 चंद्र 26/10/2034 मंगल 17/11/2034	गुरु 02/01/2035 शनि 25/02/2035 बुध 14/04/2035 केतु 04/05/2035 शुक्र 30/06/2035 सूर्य 17/07/2035 चंद्र 14/08/2035 मंगल 03/09/2035 राहु 24/10/2035	शनि 27/12/2035 बुध 23/02/2036 केतु 17/03/2036 शुक्र 24/05/2036 सूर्य 13/06/2036 चंद्र 17/07/2036 मंगल 09/08/2036 राहु 09/10/2036 गुरु 02/12/2036
<b>केतु - बुध</b> 02/12/2036 29/11/2037	<b>शुक्र - शुक्र</b> 29/11/2037 31/03/2041	<b>शुक्र - सूर्य</b> 31/03/2041 31/03/2042	<b>शुक्र - चंद्र</b> 31/03/2042 30/11/2043	<b>शुक्र - मंगल</b> 30/11/2043 29/01/2045
बुध 22/01/2037 केतु 12/02/2037 शुक्र 14/04/2037 सूर्य 02/05/2037 चंद्र 01/06/2037 मंगल 22/06/2037 राहु 15/08/2037 गुरु 03/10/2037 शनि 29/11/2037	शुक्र 20/06/2038 सूर्य 20/08/2038 चंद्र 29/11/2038 मंगल 08/02/2039 राहु 10/08/2039 गुरु 19/01/2040 शनि 30/07/2040 बुध 19/01/2041 केतु 31/03/2041	सूर्य 18/04/2041 चंद्र 18/05/2041 मंगल 09/06/2041 राहु 02/08/2041 गुरु 20/09/2041 शनि 17/11/2041 बुध 08/01/2042 केतु 29/01/2042 शुक्र 31/03/2042	चंद्र 21/05/2042 मंगल 25/06/2042 राहु 24/09/2042 गुरु 15/12/2042 शनि 21/03/2043 बुध 15/06/2043 केतु 21/07/2043 शुक्र 30/10/2043 सूर्य 30/11/2043	मंगल 24/12/2043 राहु 26/02/2044 गुरु 23/04/2044 शनि 30/06/2044 बुध 29/08/2044 केतु 23/09/2044 शुक्र 03/12/2044 सूर्य 24/12/2044 चंद्र 29/01/2045

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

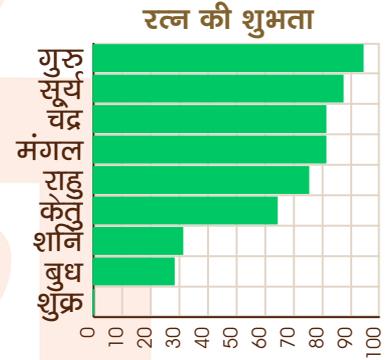
मूलांक	6
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	94%	व्यावसायिक उन्नति, धन, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	87%	व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	81%	सुख, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	81%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	75%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	64%	धनार्जन
नीलम	शनि	31%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि, ग्रह कलेश
पन्ना	बुध	28%	हानि, दुर्घटना
हीरा	शुक्र	0%	हानि, दाम्पत्य कष्ट, व्यय



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	29/11/1978	75%	69%	69%	28%	94%	12%	44%	88%	52%
गुरु	29/11/1994	93%	88%	88%	3%	100%	0%	31%	75%	64%
शनि	29/11/2013	75%	69%	69%	41%	94%	12%	53%	81%	52%
बुध	29/11/2030	93%	69%	81%	52%	94%	12%	31%	75%	64%
केतु	29/11/2037	75%	69%	88%	28%	94%	12%	6%	62%	77%
शुक्र	29/11/2057	75%	69%	81%	41%	94%	25%	44%	81%	70%
सूर्य	30/11/2063	100%	88%	88%	28%	100%	0%	6%	62%	52%
चंद्र	29/11/2073	93%	94%	81%	41%	94%	0%	31%	62%	52%
मंगल	29/11/2080	93%	88%	94%	3%	100%	0%	31%	62%	70%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/04/1971-10/06/1973	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----

### द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----

### तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सुख
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगी तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगी। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्योदय नहीं होता। अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा हमेशा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा भी आप कम ही सम्पन्न करेंगी। आयु के साथ साथ जीवन में भाग्य एवं धर्म के महत्व को भी स्वीकार करेंगी। समाज में आपको विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना भी रहेगी। आप उत्साह एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगी तथा यह व्यय शुभाशुभ दोनों प्रकार से होगा। साथ ही जमीन जायदाद आदि पर आप अधिक से अधिक व्यय करना पसन्द करेंगी तथा इसमें आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। दाम्पत्य जीवन का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। समाज में सभी लोग आपके प्रभाव एवं पराक्रम को स्वीकार करेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि सुख से युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। सांसारिक सुख संसाधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी लेकिन माता का सुख तथा स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव के कारण आप परिश्रम एवं पराक्रम से कर्म की

महत्ता को प्रमुखता देते हुए अपना भाग्योदय स्वयं करेंगी जिससे आपका परिवार खुशहाल रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता रहेगी। पारिवारिक जनों को यथोचित सुख सुविधाएं प्रदान करने में आप सफल रहेंगी।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में पद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इसके कारण जातक के विद्याध्ययन में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता है। परन्तु कालान्तर में वह व्यवधान समाप्त हो जाता है। सन्तान प्रायः विलम्ब से प्राप्त होती है या उसको होने में आंशिक रूप से व्यवधान उपस्थित होता है। पुत्र सन्तान की प्रायः चिन्ता बनी रहती है। जातक का स्वास्थ्य कभी असामान्य हो जाता है।

इस योग के कारण दाम्पत्य जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवार में जातक को अपयश मिलने का भय बना रहता है और जातक के मित्रगण स्वार्थी होते हैं और वे सब जातक का पतन कराने में सहायक होते हैं। कभी जातक को तनावग्रस्त जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के गुप्त शत्रु रहते हैं। वे सब थोड़ा बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। लाभ मार्ग में आंशिक बाधा उत्पन्न होती है एवं चिन्ता कष्ट के कारण जीवन संघर्षमय बना रहता है। जातक द्वारा संग्रहीत सम्पत्ति को प्रायः दूसरे लोग हरण कर लेते हैं। जातक को कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है और रोग व्याधि में अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक संकट जातक के ऊपर उपस्थित हो जाता है तथा जातक वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है एवं कभी-कभी जातक के मन में सन्यास ग्रहण करने की भावना जागृत हो जाती है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में कई सफलता मिलती हैं।

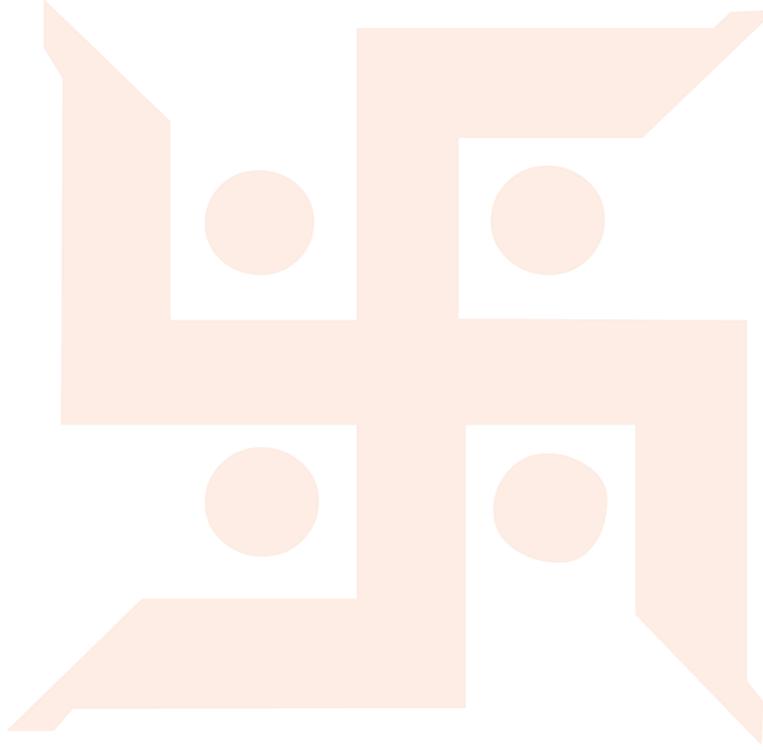
यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

### **नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

### चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत्त, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

## मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

## बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

## गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

## शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

## शनि

षष्ठभावे में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, कूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

## राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

## केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

## दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध  
( 29/11/2013 - 29/11/2030 )**

बुध की अन्तर्दशा 29/11/2013 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 29/11/2030 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध एकादश भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या तथा साझेदारी में बाधा हुई होगी और विरोधी उत्पन्न हुए होंगे। बुध की वर्तमान दशा में आपको सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ मिलेगा और सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी।

**स्वास्थ्य :**

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, स्फूर्तिवान, स्वस्थ तथा शक्तिशाली होंगे। विषाणुजन्य ज्वर तथा संक्रामक बीमारी, चर्मरोग और स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है। स्वयं को अनावश्यक मानसिक या शारीरिक कष्ट न दें। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

**अर्थ और व्यवसाय :**

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति भी होगी। आपको सट्टे तथा अन्य निवेश में लाभ होगा। आप दिन ब दिन तरक्की करेंगे और आपको सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ मिलेगा। जीविका और व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को प्रतिस्पर्धा में सफलता और उच्चाधिकारियों या सरकार से लाभ मिलेगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और सहकर्मियों तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, आय में वृद्धि, व्यापार की उत्तम संभावना तथा जीवन में तरक्की होगी। आर्थिक प्रगति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

**वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :**

मंगल की अन्तर्दशा में आपको जीवन का आनन्द और वाहन का सुख मिलेगा। आप गाड़ी की खरीद और विक्री कर सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपको अचल सम्पत्ति का अचानक लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और चन्द्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी जो लाभदायक होगी।

**शिक्षा :**

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। सामूहिक गतिविधियों से आपको लाभ होगा। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यापार तथा अन्तरराष्ट्रीय व्यापार के विषयों में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि होगी। आप सभी बौद्धिक कार्यों में बहुत अच्छा

करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा और वे आपकी खुशी के स्रोत होंगे। आपके जीवन साथी को सहे तथा निवेश में लाभ, अचानक धन की प्राप्ति तथा बच्चों से सुख मिलेगा। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उन्हें जमीन-जायदाद और सुख की प्राप्ति होगी। आपको पिता की सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, उनकी यात्रा होगी और व्यवसाय-व्यापार में सफलता मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को ख्याति, सम्पत्ति और पिता से लाभ मिलेगा। आपके बड़े भाई-बहनों को सुख, यश और ख्याति मिलेगी और उनकी यात्रा होगी। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपको सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, आपके मित्र प्रभावशाली होंगे और आपकी मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के कारण आपको लाभ वाहन तथा सुख की प्राप्ति होगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा होगी तथा जीवन में प्रगति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। राहु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और कुछ परिवर्तन होगा। शनि की अन्तर्दशा में कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

**अंतर्दशा :- बुध - गुरु  
( 14/12/2025 - 21/03/2028 )**

आपके लिए बुध की महादशा 29/11/2013 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 14/12/2025 को प्रारंभ होकर 21/03/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप सफल होंगे। चरित्र उत्तम होगा, सिद्धांतों का पालन करेंगे। धन-संपदा से युक्त होंगे। सम्मान प्राप्त होगा। सरकार से लाभ होगा। सब सुख-साधन और वाहन आदि उपलब्ध होंगे। माता से संबंध मधुर रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा ; शत्रुओं पर विजय होगी। मातहत सहयोग करेंगे।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। आपके पिता धन का संचय करेंगे। माता को साझेदारी से लाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए परिवर्तन, साझेदार से लाभ, यात्रा, अधिक खर्च और यात्रा का संकेत है।

आपकी संतान की स्पर्धियों पर विजय होगी; परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय में प्रसन्नता का वातावरण होगा।

अगर आप कार्यरत हैं तो सौभाग्यशाली रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता सफल होंगे। व्यापारियों के निवेश सार्थक होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली दाल, वस्त्र और शहद दान में दें।

**अंतर्दशा :- बुध - शनि  
( 21/03/2028 - 29/11/2030 )**

आपके लिए बुध की महादशा 29/11/2013 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 21/03/2028 को प्रारंभ होकर 29/11/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं पर विजयी होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। प्रोन्नति होगी, उच्च पद मिलेगा। कार्यालय में वातावरण मधुर रहेगा; मातहत सहयोग करेंगे। धनागम होगा ; समृद्ध बनेंगे। कार्यक्षेत्र में जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, दक्षता उत्तम रहेगी। खुशियां बढ़ेंगी। धनागम होगा, उत्साह से पूर्ण रहेंगे। जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है; तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी के जीवन में मामूली परिवर्तन हो सकता है। आपके पिता धनी बनेंगे; भूमि से अच्छी आय हो सकती है। माता प्रसन्न रहेंगी, उत्साह उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, अचल संपत्ति की प्राप्ति, कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ

**महादशा :- केतु**  
**( 29/11/2030 - 29/11/2037 )**

केतु की महादशा 29/11/2030 को आरम्भ और 29/11/2037 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु ग्यारहवें भाव में स्थित है और इसकी दृष्टि पंचम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति का लाभ, अप्रत्याशित परिवर्तन, उत्तम शिक्षा और बच्चों से सुख की प्राप्ति हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको सभी प्रकार का लाभ, वाहन-सुख और जीवन का आराम मिलेगा।

**स्वास्थ्य :**

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप साहसी और आत्मविश्वासी होंगे। केतु के कारण आपको प्रसन्नता मिलेगी और आप आशावादी होंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको दाहक पित्त-दोष, पाचन-समस्या, विषाणुजन्य तथा संक्रामक रोग आदि हो सकते हैं। कुछ सावधानी बरतकर इनसे बचाव किया जा सकता है।

**अर्थ और व्यवसाय :**

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपको हर प्रकार के लाभ, लक्ष्य और मनोकामना की पूर्ति और धन-समृद्धि की प्राप्ति होगी। सट्टे में लाभ की संभावना है और निवेश लाभदायक होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए शिक्षण, लेखन, विदेशी भाषा, अनुवाद, कम्प्यूटर विज्ञान, लेखाकार्य, ज्योतिष आदि का चयन कर सकते हैं। खेल के सामान, दवा, चमड़े, पशु, किताब, आभूषण, कम्प्यूटर आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के कार्यस्थान में स्थिति अनुकूल रहेगी। आप अपने कार्य सक्रियता से पूरा करेंगे और उच्च पद प्राप्त करेंगे। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। आपके व्यवसाय का विस्तार और कार्य में वृद्धि होगी। आर्थिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

**वाहन, यात्रा, जायदाद :**

शुक्र की अन्तर्दशा में आपको आराम मिलेगा। नयी गाड़ी खरीदने में कुछ अड़चन

आ सकती है। सम्पत्ति के लेन-देन में अचानक परिवर्तन और नुकसान होगा, इसलिए उचित प्रबन्धन की आवश्यकता है। मंगल की अन्तर्दशा में आपकी छोटी तथा शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

**शिक्षा :**

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षा-प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। कम्प्यूटर विज्ञान, भाषा, विधि, दवा, तत्त्व-मीमांसा, खेल आदि में आपकी रुचि होगी। आप सक्रिय, उद्यमी और अत्यन्त आत्मविश्वासी हैं। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे।

**परिवार :**

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को साझेदारों से लाभ, यात्रा और सफलता मिलेगी। आपके जीवन साथी को सट्टे में लाभ होगा, निवेश लाभदायक रहेगा, और अध्यात्म की ओर उनकी रुचि में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को अचानक लाभ और हानि, कुछ स्वास्थ्य समस्या और विरासती सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपकी माता की छोटी यात्रा और संबंधियों से सहायता प्राप्त होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को धन-समृद्धि की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि बड़ों को यश, ख्याति, समृद्धि और सफलता मिलेगी। उनके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा।

**अन्तर्दशा :**

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सफलता, लाभ और प्रगति होगी। शुक्र के कारण आराम और धन-समृद्धि की प्राप्ति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान साझेदारों से लाभ और प्रगति होगी जबकि चन्द्र के कारण कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो सकती है। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा, स्वास्थ्य उत्तम, शक्ति में वृद्धि तथा जीवन में सफलता मिलेगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान लाभ और धन-समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि शनि के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में कुछ परिवर्तन, उत्तम शिक्षा, सद्भाव-कार्य में वृद्धि तथा अचानक लाभ मिलेगा।

**अंतर्दशा :- केतु - केतु  
( 29/11/2030 - 28/04/2031 )**

आपके लिए केतु महादशा 29/11/2030 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/11/2030 को प्रारंभ होकर 28/04/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप भाग्यशाली रहेंगे। आप विविध गतिविधियों में भाग लेंगे और सफल रहेंगे। धनार्जन उत्तम होगा। निवेश से लाभ होगा। संतान से कुछ चिंताएं हो सकती हैं। ज्ञानार्जन में रुचि होगी। खेलकूद में भाग ले सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा। आपके पिता भाग्यशाली रहेंगे, उनकी तीर्थयात्रा या सामान्य यात्रा हो सकती है। माता धन संचित करेंगी, साझेदार से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए धन, पिता से उत्तम संबंध, आत्मविश्वास, उत्तम स्वास्थ्य और अच्छी विवेकशक्ति का संकेत है।

आपकी संतान को साझेदारी या सामूहिक गतिविधियों से लाभ होगा, सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार से लाभ होगा, यात्राएं होंगी, कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में हर्ष का वातावरण रहेगा, सहकर्मी सहयोग करेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की उपासना करें।